भूमिका

इस (चौथी) आवृत्ति में पिछली तीन आवृत्तियों की अपेक्षा ये विशेषताएं हैं :—

१—अस्थि संस्थान पहले से अधिक विस्तारपूर्वक है। छः एक्स-रे चित्र अधिक दिये गये हैं।

२—मांस संस्थान में ऊर्ध्व और अधो शाखाओं की पेशियों का वर्णन दिया गया है।

३—इस आवृत्ति में तीसरी आवृत्ति से ३४ चित्र अधिक हैं; और अनुक्रमणिका को छोड़कर ६९ पृष्ठ अधिक हैं।

पूर्ण आशा है कि पाठक इस पुस्तक को अब पहले से अधिक उपयोगी पायेंगे।

त्रिलोकीनाथ वर्मा

श्रावण शु० १
सं० १९८५

पिछली आवृत्तियों की भूमिकाओं से उद्धृत

इस पुस्तक के सम्बन्ध में मुझे निम्नलिखित महाशयों से सहायता मिली है।

(अब स्वर्गबासी) मास्टर कृपारामजी एम०ए०।

डाक्टर विश्वनाथजी एम्० बी० बी० एस्०।

महामहोपाध्याय डा० पंडित गंगानाथ झा एम्० ए०,-डी० लिट्०।

पंडित रासविहारी तिवारी एम्० एल० सी०।

डा० चन्द्रिका प्रसाद मिश्र।

साहित्याचार्य पं० घनानन्द पन्त।

त्रि० ना० व०